ता 31/3/2020
रश्मिकान्त मौर्य
दर्शनशास्त्र
आर. एस. कॉलेज
काझीला

XII(B)

(1)

वैध योगों का निर्धारण-

द्वितीय आकार के वैध योग

द्वितीय आकार में मध्यवर्ती पद दोनों आधार वाक्यों में विधेय के स्थान पर रहता है। इस योग में देखते हैं कि आठ योगों में से किन-2 से वैध रूप में निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

① AA- इन दोनों आधार-वाक्यों से द्वितीय आकार में कोई वैध निष्कर्ष नहीं निकल सकता क्योंकि 'A' दोनों में होने से मध्यवर्ती पद अव्याप्त रह जाता है।

② AE- इसमें जब एक आधार-वाक्य निषेधात्मक है तो परिणाम निषेधात्मक होगा। E में बृहत् तथा लघु दोनों पद व्याप्त हैं। इस न्याय में कोई दोष नहीं पैदा होता, क्योंकि ये दोनों पद अपने-2 आधार में व्याप्त हैं। मध्यवर्ती पद भी एक बार लघु आधार-वाक्य में व्याप्त हो जाता है। इसलिए AE से वैध रूप में E परिणाम निकाला जा सकता है। AEE द्वितीय आकार का एक वैध योग है। इसका तकनीकी नाम 'CAMESTRES' है।

③ AI- नियमत: स्पष्ट रूप से इस योग में मध्यवर्ती पद दोनों आधार-वाक्यों में अव्याप्त है। अत: कोई वैध निष्कर्ष सम्भव नहीं है।

④ AO- इस योग में एक आधार-वाक्य अंशव्यापी तथा निषेधात्मक है। अत: निष्कर्ष अंशव्यापी निषेधात्मक अर्थात् 'O' होगा। इसमें निष्कर्ष में बृहत् पद व्याप्त है जो बृहत् आधार वाक्य में भी व्याप्त है। अत: कोई दोष पैदा नहीं होता। मध्यवर्ती पद भी लघु आधार-वाक्य में व्याप्त है 'O' का विधेय होने के कारण। इस प्रकार AOO द्वितीय आकार का एक वैध योग है। जिसे BAROCO नाम दिया गया है।

⑤ EA- इस योग में एक आधार-वाक्य निषेधात्मक है अत: निष्कर्ष निषेधात्मक होगा। निष्कर्ष में E होने पर बृहत् तथा

Scanned with CamScanner

27/4/2020

द्वितीय आकार

मध्य दोनों ही पद व्याप्त हो जाते हैं जो अपने आकार वाक्यों में भी व्याप्त है। अतः इनमें कोई दोष उत्पन्न नहीं होता है। मध्यवर्ती पद भी एक बार वृहत् आधार-वाक्यों में व्याप्त है। इस प्रकार EAE द्वितीय आकार का एक वैध योग है। जिसे CESARE नाम दिया गया है।

(6) EI – इसमें एक आकार वाक्य निषेधात्मक तथा दूसरा अंशव्यापी है अतएव निष्कर्ष अंशव्यापी निषेधात्मक यानी 'O' होगा। 'O' निष्कर्ष होने से वृहत् पद इसमें व्याप्त हो जाता है जो वृहत् आधार-वाक्य में भी व्याप्त है। मध्यवर्ती पद भी वृहत् आधार-वाक्य में व्याप्त है। अनुचित लघु पद दोष नहीं है। इस प्रकार EIO, द्वितीय आकार का एक वैध योग बनता है जिसे FESTINO नाम दिया गया है।

(7) IA – इस योग में मध्यवर्ती पद एक बार भी व्याप्त नहीं होता अतः कोई निष्कर्ष नहीं होगा।

(8) OA – इस योग में मध्यवर्ती पद एक बार आधार वाक्य में व्याप्त है परन्तु वैध निष्कर्ष इसमें प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि इसमें एक आधार-वाक्य के निषेधात्मक होने से परिणाम निषेधात्मक होगा तथा उसमें विधेय अर्थात् वृहद पद व्याप्त हो जाएगा जो वृहत् आधार-वाक्य में 'O' का उद्देश्य होने की वजह से अव्याप्त है। अतः निष्कर्ष में इस प्रकार अनुचित वृहत् पद का दोष हो जाता है।

इस प्रकार द्वितीय आकार में चार वैध योग हुए – BAROCO (AOO), FESTINO (EIO), CAMESTRES (AEE), तथा CESARE (EAE)।

तृतीय आकार

तृतीय आकार में मध्यवर्ती पद का स्थान दोनों ही आधार-वाक्यों में उद्देश्य में रहता है।